Paper - II

PARTICIPATORY RAPID APPRAISAL

मानवशास्त्र में क्षेत्र अध्ययन का एक महत्वपूर्ण स्थान है। इस विधि में एक मानवशास्त्री स्वयं अध्ययन क्षेत्र जाकर आंकड़े एकत्रित करता है। इस प्रक्रिया में चूंकि मानवशास्त्री स्वयं उपस्थित होता है तब इसकी विश्वसनीयता अधिक होती है। मानवशास्त्र ग्रामीण क्षेत्र में अधिक से अधिक केन्द्रित रहता है।

भारत जब आजाद हुआ तब ~~कृषि~~ ~~और~~ के विकास के आयोगों लिए अनेक प्रकार के आयोगों का गठन हुआ। शुरुवाती के दौर में अनेक विकासात्मक प्रक्रियाएं सफल नहीं हो पाई। सरकार ने इसके बाद मानवशास्त्रीयों को नीति निर्माण में सम्मिलित किया और धीरे धीरे मानवशास्त्री नीति निर्माण के साथ-साथ उसके संचालन में भी क्रियाशील हो गए। कहते हैं कि GEORGE FOSTER द्वारा

Page No. :
Date: / /

मानवशास्त्रियों को 3 कारणों से विकासात्मक नीतियों में जोड़ा गया।
(1) मानवशास्त्रियों को क्षेत्र अध्ययन के कारण यह पता होता है कि किसी समाज में या संस्कृति में कोई कुछ कार्य करता है वह क्यों करता है।
(2) मानवशास्त्रियों को यह भी पता होता है कि उसमें कौन से सांस्कृतिक तत्व होते हैं जो विकासात्मक कार्यों को बाधा पहुंचाते हैं। और
(3) मानवशास्त्रियों को भी यह पता होता है कि इन बाधाओं को किस प्रकार परिवर्तन करके उसे समाज के विकास में अनुकूल बनाया जा सकता है।

~ इसके बाद मानवशास्त्री पूर्ण रूप से विकास के नीतियों तथा उसके संचालन में सहभागी हो गए। मानवशास्त्री मुख्य रूप से जनजातीय समाज, ~~सरल~~ सरल समाज या आदिम जाति समाज का अध्ययन करते हैं। हम यह कह सकते

है कि मानवशास्त्री ऐसे समाजों का अध्ययन करता है जिनकी जीवनशैली को हमारे मूल्य बोध के समान आलोचना की दृष्टि से देखते हैं। यहीं मानवशास्त्री अपने समर्थ के कारण इन समाजों को एक भी भिन्न दृष्टिकोण से देखता है और इसलिए यह अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है कि मानवशास्त्री ऐसे समाजों के विकासात्मक नीति निर्माण तथा संचालन में सहयोग करें। अन्य विद्वान जैसे कि अर्थशास्त्री जनजातियों के अनेक आर्थिक क्रियाकलाप को पिछड़ा हुआ बेकार मानते हैं तथा यह भी आकलन करते हैं कि यह बहुत ही जल्दी ही अन्त हो जाना चाहिए। यहाँ भी George Foster कहते हैं कि समाज में यदि कोई सांस्कृतिक प्रतिक्रिया या सांस्कृतिक संस्था जीवित है इसका मतलब है वह अवश्य ही कोई न कोई कार्य करती होगी।

ने इसमें कि वैज्ञानिक विषय भी अनुसंधान करते हैं किन्तु उनका अध्ययन वृहद होता है जिसके कारण वे स्थानीय समस्याओं को शीघ्र ढंग से नहीं समझ सकते हैं। मानवशास्त्र में यह अध्ययन सम्भव था जिसके कारण इन्हें विकासात्मक नीति निर्माण में स्थान मिला।

Date - 9/12/15

सामान्य तौर पर मानवशास्त्र में क्षेत्र अध्ययन न्यूनतम एक वर्ष का समय लेता है। जब इस प्रकार की बाधा विकासात्मक कार्यों के नीति निर्माण में आई तब यह आवश्यक हो गया कि मानवशास्त्र अपनी कार्य अवधी को कम करे। यह इसलिए आवश्यक हो गया था क्योंकि सरकार के विकास कार्यक्रमों में इतना लम्बा समय सम्भव नहीं था और तो और यदि प्रत्येक विकासात्मक कार्य में

या उसके अध्ययन में एक वर्ष का यदि लगेगा तो २ बातें होंगी
① विकास कार्य अत्यन्त धीमा हो जाएगा।
② हो सकता कि जब तक एक विकास कार्यक्रम की नीति तैयार हो, एक वर्ष की लम्बी अवधि में जिस समाज के लिए नीति बनाई जा रही हो उसकी आवश्यकता ही का स्वरूप बदल चुकी है।
③ इसी त्रुटि को दूर करने के लिए विश्व स्तर पर University Sussex में एक सम्मेलन का आयोजन कॉन्फ्रेंस 1978 में हुआ। इस अजेंडा Rapid Rural का मुख्य Appraisal। इस सम्मेलन में यह निर्णय लिया गया कि ग्रामीण विकासात्मक कार्यों के लिए हम क्षेत्रों के अध्ययन तो करेंगे किन्तु शीघ्र अध्ययन की इस प्रकार के अध्ययन की समय सीमा होगी 10 - 4 दिनों के अन्दर। इस अवधि में बहुत ही कम समय में मानवशास्त्रियों

इस क्षेत्र का अध्ययन करके
अपनी Report सौंपते हैं।
यह विधि को
कारगर बनाने के लिए मानवशास्त्र
ने इसी के अन्तर्गत और
एक विधि का निर्माण हुआ जिसे
हम FOCUSED GROUP INTERVIEV
/ DISCUSSION कहते हैं।
FGI में जो अनुसंधानकर्ता
होता है वह एक साथ औसतन
15-से 20 व्यक्तियों का समूह
का Interview लेता है। इस
साक्षात्कार के लिए 2 लोगों की
आवश्यकता होती है। जिसमें
एक MODERATOR होता है जो
साक्षात्कार का संचालन करता है
दूसरा व्यक्ति उस साक्षात्कार के
दौरान होने वाली बातों को
अंकित करता है या लिखता है
जिसे हम Document कर
इस प्रकार की विधि में मानवशास्त्री
को सूचनाएँ या आंकड़े तुरन्त
प्राप्त होते हैं। यह विधि समय की
बचत करती है तथा कम खर्च में

आप आर्थिक कार्य करते है।

→ इसके पश्चात ~~RRA~~ R.RA → RA →

→ Rapid APPROACH इस प्रकार के परिवर्तन इस लिए आई की यह विधि अब ग्रामिण क्षेत्रों में ही नहीं बल्कि किसी भी प्रकार के समाज के लिए इस्तेमाल होने लगी। यहाँ अध्ययन विधि में भी एक महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ। RA में अब एक मानवशास्त्रीयों का एक पूरा दीर्घकालीन अध्ययन करता था क्योंकि इससे पहले RRA में एक एक आर्थिक इस कार्य को पूरा करता था। इस प्रकार के परिवर्तनों से इस विधि में अब और भी कम समय लगने लगा।

PRA → Participatory Rural Approach

अब तक अनेक नीतियों का निर्माण और संचालन मानवशास्त्रीयों के द्वारा हो चुका था किन्तु सफलता की दर अब भी कम थी।

PRA मे एक महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ। सर्वे म नीति निर्माताओं ने इस बात पर अब विशेष बल दिया कि हम सबसे पहले उनसे पूछेंगे जिनके लिए उस नीति का निर्माण किया जा रहा है कि आप को क्या चाहिए। इससे पहले शिक्षित सम्पन्न ज्ञानी व्यक्ति को लगता था कि उन्होंने जो नीतियों का निर्माण कर दिया वे सभी दृष्टिकोण से उपयुक्त है। जब PRA का संचालन शुरू हुआ तथा स्थानीय लोगों के विचार और आवश्यकताएँ उनमें शामिल की गई तब विकासात्मक कार्यों में तेजी आई। इस विधि में एक महत्वपूर्ण बात और जुड़ गई जिसमें जिन व्यक्तियों के लिए नीति का निर्माण हो रहा था उन्हे अब पूर्ण रूप से नीति की शुरूआत से लेकर उसके संचालन तथा समापन तक अब स्थानीय व्यक्ति उसमें पूर्ण रूप से भागीदारी बन गए।

RRA → RA → PRA → PA
Participatory Approach

यह विधि उसके पश्चात ग्रामीण क्षेत्रों के अलावा भी सभी प्रकार के समाज में उपयोग में लाया जाने लगा। और इसके लिए बाद में हम इसे PA के नाम से जानते हैं और अन्ततः PLA - Participatory Learning & Action Approach

इस विधि में सामान्य तौर पर हम या कहे मानवशास्त्री स्थानीय व्यक्तियों के भागीदारी से सीखता है तथा उसके पश्चात उसी के अनुसार अपने कार्य का निष्पादन करता है।

मानवशास्त्र में PRA बहुत ही कारगर विधि रहा है जिसके अन्तर्गत हम अपने समाज के अन्दर विकास की नीतियों का निर्माण कर सकते हैं और दक्षता के साथ कर सकते हैं।

RRA → RA → PRA → PA → PLA